vinetur

प्रारंभिक अध्ययन का संकेत : शराब से कैंसर इम्यूनोथेरेपी का लाभ आधा हो सकता है

चूहों पर किए प्रयोगों में इम्यूनोथेरेपी का लाभ लगभग 50% घटा ; फेफड़ों के कैंसर के आंकड़ों में शराब पीने वालों के कम जीवित रहने के संकेत मिले

रविवार, 22 नवंबर 2026



प्रारंभिक शोध से संकेत मिलता है कि शराब का सेवन कैंसर इम्यूनोथेरेपी की प्रभावशीलता घटा सकता है। इससे उपचार के दौरान शराब पीने और इम्यूनोथेरेपी कैंसर देखभाल का बड़ा हिस्सा बनती जा रही है, ऐसे में मरीजों को क्या बताया जाना चाहिए—इन सवालों पर नई चर्चा शुरू हो सकती है।

इस अध्ययन पर Medical Xpress की एक रिपोर्ट के अनुसार, चूहों पर किए गए प्रयोगों में मध्यम या अधिक मात्रा में शराब के सेवन से इम्यूनोथेरेपी का लाभ लगभग 50% घट गया। शोधकर्ताओं ने फेफड़ों के कैंसर के मरीजों के आंकड़ों का भी विश्लेषण किया और शराब के सेवन तथा कम जीवित रहने के बीच संबंध पाया। शोध के इस हिस्से से यह साबित नहीं हुआ कि शराब सीधे तौर पर खराब नतीजों का कारण बनी, लेकिन इससे एक ऐसा रुझान सामने आया जिस पर शोधकर्ताओं ने और गहराई से अध्ययन की जरूरत बताई।

ये निष्कर्ष शुरुआती हैं और इनकी कुछ अहम सीमाएं हैं। चूहों में मिले नतीजे हमेशा मनुष्यों पर लागू नहीं होते। मरीजों का विश्लेषण अवलोकनात्मक था, यानी इससे संबंध तो दिख सकता है, लेकिन कारण और प्रभाव साबित नहीं किए जा सकते। फेफड़ों के कैंसर में जीवित रहने की संभावना पर कई अन्य कारकों का असर पड़ सकता है, जिनमें बीमारी का चरण, दूसरी बीमारियां, धूम्रपान का इतिहास, समग्र स्वास्थ्य और उपचार में अंतर शामिल हैं। फिर भी, पशु और मरीजों से मिले आंकड़ों का मेल ध्यान खींच सकता है, क्योंकि इससे दो अलग-अलग दृष्टिकोणों से एक ही चिंता उभरती है।

इम्यूनोथेरेपी ने प्रतिरक्षा प्रणाली को ट्यूमर कोशिकाओं की पहचान करने और उन पर हमला करने में मदद देकर कई कैंसरों के उपचार को बदल दिया है। कुछ मरीजों में यह जीवन बढ़ा सकती है या बीमारी को नियंत्रण में रख सकती है, खासकर तब जब अन्य उपचारों का लाभ सीमित हो। इसलिए, उपचार की प्रतिक्रिया को कमजोर कर सकने वाला कोई भी कारक चिकित्सकीय रूप से महत्वपूर्ण है। यदि इस शुरुआती अध्ययन में दिखा संकेत पुष्ट होता है, तो उपचार के दौरान मरीजों को दी जाने वाली नियमित सलाह पर इसका असर पड़ सकता है—विशेष रूप से इसलिए कि शराब का सेवन आम है और ऑन्कोलॉजी परामर्शों में इस पर हमेशा विस्तार से चर्चा नहीं होती।

चूहों पर मिले निष्कर्ष खास तौर पर ध्यान देने योग्य हैं, क्योंकि लाभ में बताई गई गिरावट बड़ी थी। प्रयोग की परिस्थितियों में लगभग 50% की कमी मामूली असर से कहीं अधिक का संकेत देती है। लेकिन मनुष्यों के इलाज के बारे में ठोस निष्कर्ष निकालने से पहले शोधकर्ता और डॉक्टर बहुत अधिक जानकारी चाहेंगे। इनमें यह सवाल शामिल हैं कि क्या असर अलग-अलग प्रकार के कैंसर में एक जैसा है, क्या यह सेवन की गई शराब की मात्रा पर निर्भर करता है, क्या कभी-कभार पीने में भी नियमित सेवन जितना जोखिम है, और क्या उपचार के दौरान शराब पीने का समय नतीजे को बदलता है।

फेफड़ों के कैंसर के आंकड़े मनुष्यों से जुड़ा संकेत देते हैं, लेकिन वे सावधानी बरतने की जरूरत भी रेखांकित करते हैं। कम जीवित रहने के साथ संबंध का अर्थ यह नहीं है कि इसकी वजह खुद शराब थी। शराब पीने वाले मरीजों और शराब न पीने वालों में ऐसे अंतर हो सकते हैं जिनका पिछली जानकारी पर आधारित विश्लेषणों में पूरी तरह हिसाब रखना मुश्किल हो। कुछ लोगों के खानपान, अन्य स्वास्थ्य समस्याओं या सामाजिक परिस्थितियों में अंतर हो सकता है, जो उपचार के नतीजों को प्रभावित करे। इसी वजह से शोधकर्ता आम तौर पर आगे के अध्ययन चाहते हैं, जिनमें मरीजों के बड़े डेटा-समूह और, जहां संभव हो, ऐसे भावी अध्ययन शामिल हैं जो इस सवाल की अधिक प्रत्यक्ष जांच कर सकें।

इस शुरुआती चरण में भी यह काम डॉक्टरों और मरीजों के बीच बातचीत को प्रभावित कर सकता है। कैंसर विशेषज्ञ पहले से ही मरीजों को धूम्रपान, पोषण, वजन घटाने, संक्रमण के जोखिम और दवाओं के परस्पर प्रभावों के बारे में सलाह देते हैं। यदि आगे के अध्ययन इन शुरुआती निष्कर्षों का समर्थन करते हैं, तो शराब भी इस चर्चा का अधिक नियमित हिस्सा बन सकती है। इम्यूनोथेरेपी ले रहे मरीजों, खासकर फेफड़ों के कैंसर से पीड़ित लोगों के मन में यह सवाल उठ सकता है कि उपचार के दौरान शराब कम पीनी चाहिए या उससे बचना चाहिए। मौजूदा साक्ष्य अपने दम पर कोई सार्वभौमिक नियम तय करने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं हैं, लेकिन सवाल उठाने को उचित ठहराने के लिए जरूर पर्याप्त हैं।

यह शोध अस्पतालों और क्लीनिकों से परे भी प्रासंगिक हो सकता है। बीयर, वाइन और स्पिरिट्स कंपनियों पर शराब के सेवन के बारे में स्वास्थ्य संबंधी संदेश अधिक सावधानी से देने का दबाव बढ़ सकता है, खासकर गंभीर बीमारियों से जूझ रहे लोगों के लिए। जनस्वास्थ्य समूह और चिकित्सा सेवा प्रदाता इस बात पर अधिक ध्यान दे सकते हैं कि कैंसर के उपचार के संदर्भ में शराब पर कैसे चर्चा की जाती है—सिर्फ कैंसर के जोखिम के संदर्भ में ही नहीं। यदि बाद के अध्ययन इम्यूनोथेरेपी पर इसके महत्वपूर्ण असर की पुष्टि करते हैं, तो इससे जिम्मेदार ढंग से पीने के अभियानों, चेतावनी संबंधी भाषा और बड़े स्वास्थ्य निर्णयों का सामना कर रहे उपभोक्ताओं के लिए उद्योग के संचार पर असर पड़ सकता है।

फिलहाल मुख्य निष्कर्ष यह है कि अध्ययन एक विश्वसनीय चिंता सामने रखता है, लेकिन उसका निपटारा नहीं करता। इससे संकेत मिलता है कि शराब का असर दीर्घकालीन कैंसर जोखिम या सामान्य स्वास्थ्य तक सीमित नहीं हो सकता। यह कैंसर के सबसे महत्वपूर्ण आधुनिक उपचारों में से एक में भी बाधा डाल सकती है। इस संभावना से और शोध को गति मिलने की आशा है, क्योंकि डॉक्टर यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि क्या इम्यूनोथेरेपी ले रहे मरीजों को उपचार

संबंधी सलाह देते समय शराब के सेवन को नियमित रूप से शामिल किया जाना चाहिए।